Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत में तुलनात्मक साहित्य का महत्व

डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव
सह-आचार्य एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
मोतिहारी , बिहार

तुलनात्मक अध्ययन से तात्पर्य है किसी कृतिकार , कृति अथवा विधाविशेष का अलग - अलग याएकांत रूप में अध्ययन के बजाय दूसरों के सापेक्ष अध्ययन | यह अध्ययन दो भाषाओं के अंतर्गत हो सकता है अथवा भारत जैसे देश में अनेक भाषाओं के साहित्य तक व्याप्त हो सकता है, या फिर देश - विदेश की सीमाओं का अतिक्रमण कर विविध देशों के साहित्य तक अपने क्षेत्र का विस्तार कर सकता है , अथवा अपनी परिधि के बाहर भी अन्य कलाओं एवं शास्त्रों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का आकलन कर सकता है |जहाँ तक भारत में तुलनात्मक साहित्य के महत्व का प्रश्न है तोयह कहना असंगत न होगा कि बिना तुलनात्मक हुए यहाँ की किसी भाषा के साहित्य अथवा किसी भाषिक जाति का समग्र अध्ययन नहीं किया जा सकता | इसके पीछे भारत का एक सामान्य सांस्कृतिक चरित्र है जो तमाम वैविध्य के बावजूद एक आंतरिक संगति रखता है | इसलिए **डॉ**रामविलास शर्मा . अखिल भारतीय परिपेक्ष्य में किसी भारतीय भाषा के साहित्य को देखने का आग्रह करते हैं | उनके अनुसार "इस भारत में किसी भी काल , किसी भी भाषा में जो भी साहित्य रचा गया है , उसका विवेचन भारतीय साहित्य के अंतर्गत होना चाहिए | किसी भी भाषा के साहित्य का विवेचन अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही करना उचित है | यह इसलिए नहीं कि इसे भारत पर कोई अहसान करना है वरन् इसलिए कि इस परिप्रेक्ष्य के बिना हम किसी एक भाषा के साहित्य का विवेचन कर ही नहीं सकते | जैसे आर्य या द्रविड़ भाषाओं का विकास दोनों परिवारों को अलग रखने से समझ में नहीं आ सकता , वैसे ही किसी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषाओं के साहित्य को जाने बिना समझ में नहीं आ सकता |... जोआर्य परिवार की भाषाएँ हैं, उनमें रचा हुआ साहित्य तो सम्बद्धइकाई है ही, जो द्रविड़ भाषाएं हैं, उनमें रचा हुआ साहित्य भी आर्य भाषाओं में निर्मित साहित्य से सुदृढ़ रूप में संबंध है |"[1]इस प्रकार डॉ.रामविलास शर्मा भारत के साहित्य के सम्यक अध्ययन के लिए भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की जरूरत समझते हैं| इन्द्रनाथचौधुरी स्पष्ट कहते हैं " भारतीय सन्दर्भ में भारतीय साहित्य की अवधारणा ही अपने आप में तुलनात्मक साहित्य है |"[2]

हम ऊपर कह चुके हैं कि भारत का एक सामान्य सांस्कृतिक चरित्र है |चूँकि, संस्कृति कला और साहित्य के माध्यम से मूर्त रूप ग्रहण करती है इसलिए समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक तरह का वैचारिक साम्य है, जो समस्त विविधताओं के बावजूद एक सामान्य जीवन- मूल्य की अभिव्यक्ति करता है | डॉ. नगेंद्र ने तो यहाँ तक कह दिया है कि "भारतीय वाङ्मयमें अनेक भाषाओं में अभिव्यक्त एक ही विचार है |"[3]यही सामान्य विचार और जीवन मूल्य भारतीय साहित्य की अवधारणा को निर्मित करते हैं | जिस प्रकार परस्पर भिन्न बौद्ध, जैन, सांख्य, मीमांसा आदि दर्शन एक सामान्य भारतीय दर्शन के नाम से जाने जाते हैं और उनका एक विशेष चरित्र है जो विश्व -दर्शन के समक्ष अपना अस्तित्व रखता है | उसी प्रकार बंगला, मराठी, हिंदी, गुजराती, तमिल,तेलुगू, कन्नड़ आदि सभी भाषाओं के साहित्य मिलकर 'भारतीय साहित्य ' का निर्माण करते हैं |डॉ. राधाकृष्णन का भी मन्तव्य था कि भारतीय साहित्य एक है यद्यपि वह बहुत-सी भाषाओं में लिखा जाता है| [4]डॉ. सियाराम तिवारी लिखते हैं " भारतीय साहित्य का अस्तित्व उसी तरह स्वयंसिद्ध है जिस प्रकार भारत का अस्तित्व |

[1]राम वलास शर्मा, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2019,पृ. 72
[2]इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2018, पृ.78
[3]डॉ. नगेन्द्र, *भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता,* भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018,पृ.xxxi
[4]इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2018, पृ. 99

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तमाम विविधताओं के बावजूद सांस्कृतिक एकता से जुडा हुआ भारत एक राष्ट्र है |विविधता में एकता भारत की पहचान है | यही बात भारतीय साहित्य के सम्बन्ध में भी है | जैसे भारत में चार प्रजातियों के लोगों के रहते हुए भी सब भारतीय हैं उसी प्रकार विभिन्न भाषाओं में लिखा गया साहित्य भी भारतीय साहित्य है |" [5]अत: भारतीय साहित्य की अवधारणा के निर्माण के लिए तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है |

अब प्रश्न उठता है कि वेकौन- कौन सी प्रवृत्तियां हैं जो तमाम भारतीय भाषाओं के साहित्य में विद्यमान हैं और जो उन भाषाओं के आत्मगत वैशिष्ट्य का अतिक्रमण करती हैं ? विदेशी भाषा और साहित्य से प्रभावित होने पर भी वे कौन - सी विशिष्टताएँरही हैं जो भारतीयता को अतिक्रमित नहीं कर पाती ? इन प्रश्नों का समाधान तुलनात्मक साहित्य ही कर सकता है|

पहले प्रश्न पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि तमिल और उर्दू को छोड़कर जन्मकाल के अतिरिक्त सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य के विकास के चरण भी प्राय: समान ही हैं | भाषाओं के पारिवारिक वैभिन्न्य के बावजूद उनकी साहित्यिक विरासत भी समान है | रामायण, महाभारत , पुराण , भागवत , बौद्ध -जैन ग्रंथ ,उपनिषद्, षड्दर्शन,नाट्यशास्त्र,ध्वन्यालोक,काव्यप्रकाश आदि सभी भारतीय भाषाओं के प्रेरणा स्रोत हैं | सारी भाषाएँ इनकी उत्तराधिकारिणीहैं | नाथ साहित्य, संत साहित्य, चारण काव्य,प्रेमाख्यानक काव्य, वैष्णव काव्य , देशभक्ति गीत , प्रगतिशील काव्य इत्यादि कमोबेश सारी भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होते हैं | साहित्यिक प्रवृत्ति की दृष्टि से नाथ -काव्य प्राय : सभी भारतीय भाषाओं के आरंभ में प्राप्त होता है | इसका क्षेत्र मूलतः उत्तर और पूर्व भारत रहा , किंतु इसने दक्षिण पर भी प्रभाव डाला | तेलुगू की कृति 'नवनाथचरित्रम्' इसका प्रमाण है | मराठी में

[5]डॉ. सयाराम तिवारी, भारतीय साहित्य की पहचान, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015, पृ. 10

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'अमरनाथसावद' नाम से गोरखनाथ की वाणी ही मिलती है | बंगाल इसका गढ़ ही रहा है तथा उड़िया एवं असमिया पर भी इसका जबर्दस्त प्रभाव है |हिन्दी में अनेक नाथों की रचनाएँ उपलब्ध हैं| इस प्रदेश में आज भी नाथों के अनुयायीगोरखनाथ और भरथरीके गीत गाते फिरते हैं |नाथों के बाद चारण काव्य की प्रवृत्ति आती है | हालांकि तमिल साहित्य में 500-200 ईपू.. में ही चारण काव्य की प्रवृत्ति मिलती है , लेकिन मराठी, पंजाबी, गुजराती और हिन्दी साहित्य में यह प्रवृत्ति काफी बाद में मिलती है | मराठी में वीरगीत- रूप पवाड़े चारण काव्य के अंतर्गत आते हैं | गुजराती में श्रीधर का 'रणमल्ल छंद' और पद्मनाभ का 'कान्हदड़े प्रबंध' आदि अनेक वीर-रस प्रधान काव्य भारतीय चारण काव्य परंपरा की अमूल्य विभूतियाँहैं| हिंदी में आल्हा,पृथ्वीराजरासो,खुमानरासो आदि चारण काव्य ही है | भारतीय काव्य साहित्य को संत - काव्यधारा ने अत्यंत व्यापक रूप से प्रभावित किया है | तमिल में 'अठारहसिद्धर',तेलुगू में वेमन, वीरब्रह्म, कन्नड़ में सर्वज्ञ , मराठी में ज्ञानदेव , नामदेव ,एकनाथ, पंजाबी में गुरुनानक , गुजराती में सहजानंद, उड़िया में भीमाभाई तथा हिन्दीमें कबीर,रैदास, दादू आदि संतों ने इस साहित्य में योग दिया |प्रेमाख्यानक और वैष्णव काव्यधारा भी इसी प्रकार सारे भारत में प्रसारित हुई |आधुनिक साहित्य की छायावादी- रोमानी प्रवृत्ति, राष्ट्रीय- चेतना की प्रवृत्ति और प्रगतिशील-प्रयोगशील प्रवृत्ति भी संपूर्ण भारत में विद्यमान रही हैं | काव्य शिल्प की दृष्टि से महाकाव्य,खंडकाव्य, मुक्तक, आख्यायिका,चरितकाव्य,रास, पद- शैली आदि भी सभी भारतीय भाषाओं में प्राप्त होते हैं|

अब दूसरे प्रश्न पर विचार करते हैं कि किस प्रकार भारतीय ता विदेशी प्रभाव के बावजूद अक्षुण्ण रहती है | इसके लिए हम छायावाद के उदाहरण से देखने का प्रयास करते हैं | अंग्रेजी रोमांटिसिज्म का प्रभाव बंगला पर पड़ा और बंगला से वह प्रवृत्ति हिन्दी में आई | अंग्रेजी का रोमांटिसिज्मजहाँहीगेल आदि आत्मवादी दार्शनिकों और रूसो के सिद्धांत - स्वतंत्रता, समानता,

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भाईचारा से प्रेरणा ग्रहण करता है , बंगला के सबसे बड़े रोमांटिक या छायावादी -रहस्यवादी कवि रवींद्रनाथटैगोर वेदांत दर्शन में अपनी जमीन ढूंढते हैं |हिन्दी के कवियों में निराला विवेकानंद दर्शन से ,प्रसादप्रत्यभिज्ञादर्शन से और पंत अरविंद दर्शन से प्रभावित हैं| इस प्रकार भारतीयता बनी हुई है | इसी प्रकार प्रत्येक कालखंड में विदेशी प्रभाव भारतीय साहित्य ने ग्रहण तो किया लेकिन भारतीयता बरकरार रखी |

साहित्य- बोध की भांति ही किसी भारतीय भाषा का इतिहास लेखन बिना तुलनात्मक अध्ययन के संभव नहीं है | डॉ.रामविलास शर्मा ने लिखा भी है "इतिहासकार चाहे मार्क्सवादी हो, चाहे गैर मार्क्सवादी , भारतीय साहित्य का इतिहास लिखेगा तो उसे विभिन्न भाषाओं के साहित्य के आपसी संबंधों पर ध्यान देना होगा | यदि उसे किसी एक भाषा का इतिहास लिखना हो तो भी अन्य भाषाओं से उसके संबंधों पर ध्यान देना होगा | वास्तविकता यह है कि भारत की किसी भी भाषा के साहित्य का इतिहास सही ढंग से अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही लिखा जा सकता है |"[6]उदाहरण के लिए हम हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को लेते हैं | इसका विवेचन दक्षिण के अलवारोंऔर नयनारोंका जिक्र किए बिना नहीं हो सकता | अगर दक्षिण के इस प्रभाव पर विचार न किया जाए तो हम भक्तिकाल को केवल इस्लाम की प्रतिक्रिया मानेंगे , जिससे भक्ति काव्य का स्वरूप स्पष्ट न होगा | इसी प्रकार बंगला के साहित्येतिहास में ब्रजबुली साहित्य ब्रजभाषा काव्य परंपरा की चर्चा के बिना और अस्पष्ट ही रहेगा |

साहित्य की सम्यक्अवबोध और उसके इतिहास लेखन के लिए परंपराओं की सही खोज की जरूरत होती है | यह परंपरा रूप और अंतर्वस्तु दोनों की होती है | इसके लिए तुलनात्मक साहित्य अनिवार्य है | तुलनात्मक साहित्य सहित्येतिहास की लुप्त कड़ियों की खोज करता है |

[6]राम वलास शर्मा, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2019,पृ.8

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल को हिन्दी के गीतिकाव्य की परंपरा की खोज में कठिनाई हुई थी , जो अपभ्रंश के अतिरिक्त दक्षिण भारत की भाषाओं और बंगला के साहित्य में सहज ही प्राप्त हो जाती है | वात्सल्य वर्णन की परंपरा सूर से पहले हिन्दी में प्रबल एवं व्यवस्थित रूप से नहीं मिलती, तो साहित्येतिहासकारों को आश्चर्य होता है , लेकिन गुजराती कवि भालण ने अपनेआख्यानों में असमिया कवि ,माधवदेव ने अपने बड़गीतों में कृष्ण की बाल - लीलाओं के अत्यंत सुंदर चित्र खींचे हैं |

साहित्य के इतिहास के साथ ही तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन से सामाजिक इतिहासलेखन में भी सहायता मिलती है |लियोनेलट्रिलिंग के अनुसार "साहित्य का एक बड़ा अंश इतिहास ही होता हैजो वैयक्तिक , राष्ट्रीय और विश्वव्यापी घटनाओं की व्याख्या करता है |"[7]अतः महत्वपूर्ण कृतियों का अध्ययन कर सामाजिक इतिहास लिखा जा सकता है | इसमें तुलनात्मक साहित्य का महत्व इस बात में है कि साहित्यिक समाजशास्त्र के निष्कर्षों काउपस्थापन विभिन्न भाषाओं के साहित्य और समाज की विकसनशील परंपरा में ही होता है | कुछ निष्कर्ष इस प्रकार हैं - जर्जर सामंतवादी व्यवस्था में भक्ति काव्य का जन्म होता है | यह भक्तिकाव्य भक्ति के आवरण में सामंतवाद के प्रति विद्रोह हैं | महाकाव्य का जन्म गण समाज में होता है और उसका विकास सामंतवादी काल में | उपन्यास पूँजीवादी व्यवस्था के साथ अस्तित्व में आया | इस प्रकार अगर किसी काल खंड में भक्तिकाव्य की प्रचुरता , उपन्यास की प्रचुरता या महाकाव्यों का आधिक्य मिले तोसहज ही उस समाज की सामाजिक - आर्थिक स्थिति का अनुमान हो जाता है | उदाहरण के लिए दक्षिण में भक्तिकाल पहले आया, इसका मतलब है कि सामंतवाद के प्रति विद्रोह वहाँपहले शुरू हुआ | बंगाल में उपन्यास हिन्दी से पहले आया इससे

[7] लयोनेलट्रि लंग, साहित्य में वगत का बोध, पाश्चात्य आलोचना शास्त्रीय निबन्ध, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997, पृ. 47

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हम अनुमान कर सकते हैं कि हिन्दीप्रदेश में पूंजीवाद बाद में आया | सामाजिक इतिहास में दो विभिन्न जातियों के अतीत या वर्तमान में पारस्परिक संबंधों के अध्ययन के लिए भी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की जरूरत पड़ती है |प्राय: विजेता जाति का अधिक अनुकरणविजित जाति करती है | भारतीय भाषाओं के साहित्य में अबाध गति से फारसी , अंग्रेजी, तुर्की, अरबी का प्रयोग इसी का प्रतिफल है | इसी प्रकार सांस्कृतिक संबंधों की सूचना भी तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन से प्राप्त होती है | मलयालम की 'मणिप्रवालं' शैली में संस्कृत और मलयालम दोनों का मिश्रण है |ब्रजभूमि में ब्रज और बंगला दोनों का मिश्रण है | यह सब पारस्परिक सांस्कृतिक संबंधों की सूचना देते हैं |

भाषा विज्ञान की एक शाखा 'भाषिक भूगोल' है जिसके अंतर्गत भाषाओं के क्षेत्र का निर्धारण किया जाता है |भाषावैज्ञानिक सिद्धांत कभी- कभी विवेचन में असमर्थ हो जाते हैं या यों कहें कि व्यावहारिक दृष्टिकोण से असफल हो जाते हैं तो तुलनात्मक साहित्य इसका समाधान करता हैं | चूँकिभारत एक बहुभाषिक देश है इसलिए बार के बार भाषाओं- क्षेत्र के निर्धारण की जरुरत पड़ती है | ऐसी स्थिति में तुलनात्मक साहित्य की सहायता से भाषिक भूगोल के निष्कर्षों को अधिक पुष्ट किया जा सकता है अथवा उसकी असमर्थता के समय इससे काम लिया जा सकता है | उदाहरण के लिए भाषाविज्ञान के आधार पर बिहारी बोलियों- मैथिली, मगही, भोजपुरी बंगला के निकट जान पड़ती है | अगर इस आधार पर भाषा क्षेत्र निर्मित किया गया तो बिहारी बोलि याँ बंगला के अंतर्गत आ जाएँगी जो व्यावहारिक दृष्टि से अनुपयुक्त है | ऐसी स्थिति में यदि यह देखा जाएगा कि इस क्षेत्र के अधिकतम साहित्यकार अपनी परंपरा कहाँ से ग्रहण करते हैं तो यह एक व्यावहारिकअध्ययन होगा ,जिसके लिए तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता होती है | इसके अतिरिक्त कुछ अन्य भाषावैज्ञानिक त्रुटियों के निराकरण में भी कला साहित्य की उपादेयता है | उदाहरण के लिए भाषावैज्ञानिक अगर कोंकणी या गोबानी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भाषा का अध्ययन करता है तो , उसे कुछ ऐसी शब्दावलियाँ मिलेंगी, जिनकी व्युत्पत्ति भारतीय संदर्भ में असंभव होगी | ऐसी स्थिति में वह उन शब्दों को देश ज मान लेगा | यह एक त्रुटि होगी जो पुर्तगाली भाषा के साथउनके तुलनात्मक अध्ययन ना करने के कारण होगी | आज जिन शब्दों को हम देश ज मानते हैं औरउसकी व्युत्पतिको असंभव मानते हैं यह संभव है कि तुलनात्मक अध्ययन से उसकी व्युत्पत्ति ज्ञात हो जाए |

भारत के प्राय: बड़े रचनाकारों ने अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषाओं के साहित्य में भी हाथ आजमाया है |प्रेमचंदहिन्दीमेंउर्दू से आए थे | निराला ने बंगला के अतिरिक्त उर्दू बहरोंमें भी कविता लिखी है |भारतेंदु ने मराठी ,बांग्ला, गुजराती , उर्दू ,हिन्दीसभीभाषाओं में रचनाएं की हैं | इसके अतिरिक्त भारत के अधिकांश व्यक्ति (विशेषत:हिन्दी प्रदेश के) कम- से-कम दोभाषाओं का प्रयोग करते हैं | इनमें एक तो मानक भाषा होती है और दूसरी बोली |बोलियों में भी कमोबेश साहित्य होताहै भले ही लोक- साहित्य क्यों ना हो | अगर छायावाद को ही लें, तो बृहत्त्रयीके तीनों क वि खड़ी बोली प्रदेश से नहीं आते | पंत कुमायूँ के है, प्रसाद भोजपुरी क्षेत्र के तो निराला अवधी क्षेत्र के | अब कैसे कहा जाए कि कुमायूँनीसाहित्य या लोक साहित्य का प्रभाव पंत पर न होगा ,अवधी साहित्य से निराला अछूते होंगे और प्रसाद पर भोजपुरी लोक का असर ना हो गा | ऐसी स्थिति में तुलनात्मक साहित्यिकअध्ययन के अतिरिक्त समग्रता में विवेचन -विश्लेषणका विकल्प हीक्या है ?

किसी भी प्रतिमान का निर्माण बिना तुलनात्मक अध्ययन के नहीं होता | चाहे वह शिवसिंहसेंगरकी 'सूर सूर तुलसीससी...' वाली आलोचना हो या आचार्य शुक्ल केलोकमंगल की साधनावस्था और सिद्धा वस्था का प्रश्न हो| प्रत्येक रचना का महत्व अपने समकालीन और पूर्ववर्ती रचनाओं के सापेक्ष ही होता है | साहित्य की निगत सार्थकता और वर्तमान अर्थवत्ता का

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रश्न भी कहीं- न- कहीं सापेक्षिक रूप से व्यक्त होता है |इलियटके अनुसार"होता यह है कि जब एक नई रचना (जो चेतना को प्रभावित करती है) का आगमन होता है तो सारी पूर्व-लिखित रचनाएँ प्रभावित हो जाती हैं |" [8]यह कथन रचना की सापेक्षता में देखने पर ही बल देता है |'राम की शक्तिपूजा' का महत्व तभी उद्घाटित हो सकता है जब 'कम्बरामायण' के संदर्भ में इसे देखा जाए | यह सापेक्षता ही रचनाकार की मौलिकता या वैयक्तिकप्रतिभा को व्यक्त करती है | इसके अभाव में एक कूपमंडूकता की स्थिति विद्यमान रहेगी | आज जब रचनाकारों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार और सम्मान दिए जाते हैं ; बिना तुलनात्मक अध्ययन के संभव नहीं है |

तुलनात्मक अध्ययन जातीय पूर्वाग्रहों और क्षेत्रवाद को नष्ट करता है| कुछ लोगों का कहना है कि इससे जातीय अस्मिता समाप्त होती है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है | जिसप्रकार राजनीति में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण उग्र राष्ट्रवाद का निषेध करता है , राष्ट्र भावना का नहीं, इसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में सार्वभौम कल्पना राष्ट्रीय अथवा जातीय पूर्वाग्रहों का ही खंडन करती है, राष्ट्रीय भावना का नहीं | यह स्थिति भारतीय भाषाओं के साहित्य पर भी लागू होती है | तमिल आदि अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का जमकर विरोध हुआ ; अगर तुलनात्मक साहित्य विकसित होता तो यह स्थितिकदाचित्रआती | संभव है हिन्दी की राष्ट्रभाषा संबंधी समस्याएँ भी काफी हद तक दूर हो जाती |

तुलनात्मक साहित्य हमारेसौन्दर्यबोधकोग्लोब्लाइज्ड या वैश्वीकृत करता है |अज्ञेयने तो बहुत पहले ही कह दिया था कि अब पूर्व और पश्चिम की संवेदनाओं में कोई फर्क नहीं रह गया है |इसके लिए काव्य का मानक भी सार्वभौम होना चाहिए | भारतीय संदर्भ में बात करें तो हमारे पास 'भारतीयकाव्यशास्त्र' पहले से है | चूँकि नाट्यशास्त्र,ध्वन्यालोक,काव्यालंकार आदि सभी

[8]टी. एस. इलयट, *परंपरा और वैयक्तिक कला-कौशल*, पाश्चात्य आलोचना शास्त्रीय निबन्ध, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997, पृ. 7

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE JOURNAL
Vol. 18, Issue 10, Oct 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारतीय भाषाओं के उपजीव्य है इसलिए काव्य यासाहित्य के मानदंड सभी भारतीय भाषाओं के लिए समान है | लेकिन इधर कुछ वर्षों से दलित और स्त्री विमर्श जोरों पर हैं, जिनके लिए अलग सौन्दर्यशास्त्र की जरूरत है| मराठी में दलित सौंदर्यशास्त्र विकसित हो चुका है , किंतु हिन्दी में अभी वह घुटनों के बल गतिशील है |अबभूमंडलीकरण के इस दौर में पाश्चात्यBlack literature के संदर्भ में भारतीय दलित लेखन की तुलना कर एक सार्वभौमदलित सौंदर्यशास्त्र कीआवश्यकता है, जिससेहाशियेके लोगों की संवेदना पर समग्र रूप से विचार किया जा सकें | यही बात स्त्री-विमर्श के संदर्भ में भी कही जा सकती है | यह परिकल्पना तुलनात्मक साहित्य के बिना संभव नहीं है |

कला भी साहित्य की भाँति मानवीय अभिव्यक्ति का एक रूप हैं | इसलिए तुलनात्मक साहित्यको केवल साहित्य जगत् तक संकुचित नहीं किया जा सकता |अर्नाल्डहाउजर ने साहित्य और ललित कलाओं की तुलना पर 'कला का सौंदर्य शास्त्र' भी निर्मित किया है | भारतीय सन्दर्भमें देखें तो कलाओं पर बातचीत साहित्य के संदर्भ में होती रही है | बिहारी के दोहोंके आधार पर चित्रों की रचना हो चुकी है| रवीन्द्रनाथ के चित्र , संगीत और काव्य में एक साम्य पाया जाता है | कहना न होगा कि ऐसे अध्ययन तुलनात्मक को स्वतंत्र अनुशासन के रूप में मान पर ही किए जा सकते हैं |

इस प्रकार भारत में तुलनात्मक साहित्य की महत्ता असंदिग्ध है,लेकिनइसकी सार्थकता तब है जब वह राष्ट्र की सीमासे परे जाकर विश्व साहित्य की अवधारणा में योग दे |